Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

अंक 38

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

24 नवम्बर 2016 ई   23 सफर 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

प्रत्येक योजना जो मेरे लिए की जाती है ख़ुदा दुश्मनों को इस में नामुराद रखता है

और बावजूद हज़ारों रोकों के कई लाख तक मेरी जमाअत ख़ुदा ने कर दी। इसलिए अगर यह करामत नहीं तो और क्या है।

अगर उसकी मिसाल विरोधियों के पास मौजूद है तो वह पेश करें नहीं तो इसके सिवाय और क्या कहें कि लअनतुल्लाह अलल्काज़बीन

अब हमारा और विरोधियों का झगड़ा चरम तक पहुंच गया है और अब यह मामला वह ख़ुद तय करेगा जिसने मुझे भेजा है।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

यह उल्लेख है कि अब्दुल हकीम खान ने अपने जैसे दूसरे लोगों का पालन करके मेरे पर आरोप लगाए हैं कि मैं झूठ बोलता रहा हूँ और मैं दज्जाल हूँ और हराम खाने वाला हूँ और ख़यानत करने वाला हूं और अपने रिसाला अल मसीहुद्दजाल में तरह-तरह के मेरे दोषों का वर्णन किया है अत: मेरा नाम पेट पूजा करने वाला, नफस का अनुकरण करने वाला, अहंकारी, दज्जाल, शैतान अनभिज्ञ मजनून कज़्ज़ाब सुस्त हराम खाने वाला वादा तोड़ने वाला ख़यानत करने वाला रखा है और दूसरे कई दोष लगाए हैं जो इस किताब मसीहुद्दज्जाल में लिखे हुए हैं और यही सब दोष हैं जो अब तक यहूदी हज़रत ईसा पर लगाते हैं। इसलिए यह ख़ुशी की बात है कि इस उम्मत के यहूदियों ने भी वही दोष मुझ पर लगाए मगर मैं नहीं चाहता कि इन सभी आरोपों और गालियों का जवाब दूँ बल्कि इन सभी बातों को ख़ुदा तआला के हवाले करता हूँ अगर में ऐसा ही हूँ जैसा कि अब्दुल हकीम और उस जैसे लोगों ने मुझे समझा है तो ख़ुदा तआला से बढ़कर मेरा दुश्मन कौन होगा और अगर मैं ख़ुदा तआला के निकट ऐसा नहीं हूँ तो मैं यही बेहतर समझता हूँ कि इन बातों का जवाब ख़ुदा तआला पर छोड़ दूं। हमेशा इसी तरह से अल्लाह तआला की सुन्नत है कि जब कोई फैसला ज़मीन पर हो नहीं सकता तो इस मुकदमा को जो उसके किसी रसूल के बारे में होता है ख़ुदा तआला अपने हाथ में ले लेता है और आप फैसला करता है और अगर विरोधियों में से कोई विचार करे तो उनके आरोपों से भी मेरी करामत ही साबित होती है क्योंकि जब मैं एक ऐसा क्रूर और दुष्ट हूँ कि एक तरफ तो पच्चीस साल से ख़ुदा तआला पर झूठ बोल रहा हूँ और रात को अपनी ओर से दो चार बातें करता हूँ और सुबह कहता हूं कि ख़ुदा का यह इल्हाम है और फिर दूसरी ओर ख़ुदा तआला की प्रजा पर यह ज़ुल्म करता हूँ कि असंख्य रुपए बुरी निय्यत से खा लिया है। वादा तोड़ता हूँ। झूठ बोलता हूं और अपने नफस की पूजा के लिए उनका नुकसान कर रहा हूँ और दुनिया के दोष अपने अंदर रखता हूं। फिर बजाय क्रोध के ख़ुदा की रहमत मुझ पर उतरती है। प्रत्येक योजना जो मेरे लिए की जाती है ख़ुदा दुश्मनों को इस में नामुराद रखता है और उनके असंख्य गुनाहों और झूठों और ज़ुल्म और हराम खाने के कारण से न मेरे पर बिजली गिरती है और न ज़मीन में धंसाया जाता हूँ बल्कि सभी शत्रुओं के विरुद्ध मुझे मदद करता है। इसलिए बावजूद कई उनके हमलों में बचाया गया। * और भी बावजूद हज़ारों रोकों के कई लाख तक मेरी जमाअत ख़ुदा ने कर दी। इसलिए अगर यह करामत नहीं तो और क्या है। अगर उसकी मिसाल विरोधियों के पास मौजूद है तो वह पेश करें नहीं तो इसके सिवाय और क्या कहें कि लअनतुल्लाह अलल्काज़बीन। क्या उनके पास पच्चीस साल के मुफ़्तरी की कोई मिसाल है जिसे बावजूद इस अवधि के झूठ के समर्थन और इलाही नुसरत के सैंकड़ों निशान दिए गए हों और वह दुश्मनों के प्रत्येक हमले से बचाया गया हो।

فَاْتُوْا بِهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ

सार यह है कि अब हमारा और विरोधियों का झगड़ा चरम तक पहुंच गया है और अब यह मामला वह ख़ुद तय करेगा जिसने मुझे भेजा है। अगर मैं सादिक हूँ तो ज़रूर है कि आसमान मेरे लिए एक ज़बरदस्त गवाही दे जिससे शरीर कांप जाएं और अगर मैं पच्चीस वर्षीय दोषी हूं जिसने इस लम्बी अवधि तक ख़ुदा पर झूठ बोला है तो मैं कैसे बच सकता हूँ। इस मामले में अगर तुम सब मेरे दोस्त भी बन जाओ तब भी हलाक किए गए हो क्योंकि ख़ुदा का हाथ मेरे साथ है। हे लोगो ! तुम्हें याद रहे कि मैं काज़िब नहीं बल्कि पीड़ित हूँ और मुफ़्तरी नहीं बल्कि सादिक हूँ। मेरे पीड़ित होने पर एक जमाना बीत गया है। यह वही बात है कि आज से पच्चीस साल पहले ख़ुदा ने फरमाया जो बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हुआ अर्थात ख़ुदा का यह इल्हाम कि दुनिया में एक नज़ीर(डराने वाला) आया पर दुनिया ने इसे स्वीकार नहीं किया लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े बलवन्त हमलों से उसकी सच्चाई उजागर कर देगा। यह उस समय का इल्हाम है, जबकि मेरी ओर न कोई दावत थी और न कोई इनकार था केवल भविष्यवाणी के रंग में ये शब्द थे जो विरोधी मौलवियों ने पूरे किए। अत: उन्होंने जो चाहा किया। अब इस भविष्यवाणी के दूसरे वाक्यांश के प्रकट होने का समय है अर्थात यह वाक्यांश कि लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े बलवन्त हमलों से इसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।

* कप्तान डगलस साहब डिप्टी कमिशनर की अदालत में मेरे ख़ून का मुकदमा दायर किया गया मैं उस से बचाया गया बल्कि बरी होने की ख़बर पहले से मुझे देदी गई। और कानून डाक के उल्लंघन का मुकदमा मेरे पर चलाया गया, जिसकी सज़ा छह महीने कैद थी इससे भी बचाया गया और बरी होने की ख़बर पहले से मुझे दे दी गई। इसी तरह मिस्टर डोई डिप्टी की अदालत में एक आपराधिक मामला मेरे पर चलाया गया आख़िर उस में भी ख़ुदा ने मुझे रिहाई प्रदान की थी और दुश्मन अपने उद्देश्य में नामुराद रहे और इस रिहाई के पहले मुझे ख़बर दी गई। फिर एक मुकदमा आपराधिक झेलम के एक मजिस्ट्रेट संसार चन्द की अदालत में करम दीन नामक एक व्यक्ति ने मुझ पर दायर किया इससे भी बरी किया गया और बरी होने की ख़बर पहले से ख़ुदा ने मुझे दे दी। फिर एक मुकदमा गुरदासपुर में इसी करम दीन ने आपराधिक मेरे नाम दायर किया इस में भी बरी कर दिया गया और बरी होने की ख़बर पहले से ख़ुदा ने मुझे दी उसी तरह मेरे शत्रुओं ने आठ हमले मेरे पर किए और आठ में ही नामुराद रहे और ख़ुदा की वह भविष्यवाणी पूरी हुई जो आज से पच्चीस साल पहले बराहीन अहमदिया में वर्णित है अर्थात यह कि يَنْصُرُكَ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ क्या यह करामत नहीं? इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 188 -190)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा रस्मो-रिवाज और बिदअतों की मनाही (भाग-2)

मौत, फ़ौत से सम्बंधित रस्में

रोना पीटना

मौत फ़ौत हो जाने पर जो बुरी रस्में प्रचलित हैं उन में से एक यह है कि लोग रोते पीटते और चिल्ला-चिल्ला कर हाय हाय करते हैं, औरतें ऐसे अवसरों पर बहुत ही नाटक करती हैं। जब रिश्तेदार या पड़ोसी शोक प्रकट करने के लिये आते हैं तो औरतें हर नई आने वाली औरत के गले में हाथ डालकर रोती पीटती हैं फिर कुछ लोग एक एक महीना या एक एक साल तक शोक मनाते हैं, ये सब बातें वर्जित हैं। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

''मातम की हालत में रोना-पीटना और चीखें मारना और अशुभ बातें मुंह पर लाना ये सब ऐसी बातें हैं जिन के करने से ईमान समाप्त होने का ख़तरा है और ये सब रिवाज़ हिन्दुओं से लिये गये हैं। अगर रोना हो तो सिर्फ़ आँखों से आँसू बहाना जाइज़ है और जो इससे ज़्यादा है वह शैतान से है।"

फ़िर फ़रमाते हैं :-

''अपनी शेख़ी और बड़ाई जताने के लिये सैकड़ों रुपये का पुलाव और ज़र्दा पकाकर बिरादरी वग़ैरह में बाँट दिया जाता है, इस वजह से कि लोग तारीफ़ करें...। ये सब शैतानी तरीक़े हैं जिन से प्रायश्चित करना आवश्यक है"।

(इश्तिहार तब्लीग़ व इन्ज़ार के उद्देश्य से)

क़ुल

इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

''क़ुल ख़्वानी (जो मरने वाले की मौत के बाद तीसरे दिन की जाती है) इसकी कोई आधार शरीयत में नहीं है... सहाबा किराम (रज़ि.) की भी मृत्यु हुई, क्या कभी उनकी मृत्यु पर किसी ने ''क़ुल" पढ़े ? सैकड़ों साल के बाद दूसरी बुरी रस्मों की तरह ये भी एक बुरी रस्म निकल आई है।"

(अख़बार बदर, 1904 ई.)

फ़ातिहा ख़्वानी

किसी के मरने के बाद कुछ दिन लोग एक जगह इकट्ठा होते और फ़ातिहा ख़्वानी यानी बख़शिश की दुआयें करते हैं। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

''फ़िर ये सवाल है कि क्या नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम या सहाबा किराम या नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना के लोगों में से किसी ने इस तरह किया ? जब नहीं किया तो क्या ज़रूरत है बेकार में बुरी रस्म का दरवाज़ा खोलने की ? हमारा मज़्हब तो यही है कि इस रस्म की कुछ ज़रूरत नहीं, नाजाइज़ है। जो जनाज़ा में शामिल हो सकें वह अपने तौर पर दुआ करें या जनाज़ा ग़ायब पढ़ें"।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द नौ, पृ. 177)

चिहल्लुम

एक रस्म चिहल्लुम की है, यानी किसी क़रीबी रिश्तेदार की मौत के चालीसवें दिन मजलिस होती है और खाना पकाकर मरने वाले के नाम पर लोगों में बाँटा जाता है। इस बारे में हुज़ूर ने फ़रमाया :-

''यह रस्म नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा की सुन्नत से बाहर है"। (अख़बाार बदर, 14 फ़रवरी 1907 ई.)

ख़तम क़ुर्आन

ख़तम क़ुर्आन से मुराद वह रस्मी क़ुर्आन ख़्वानी (क़ुरआन पढ़ना) है जो किसी मरने वाले को सवाब पहँचाने की ख़ातिर इकट्ठा होकर घरों में या क़बरों पर की जाती है। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

''मुर्दा पर क़ुर्आन ख़तम करने का कोई सबूत नहीं, सिर्फ़ दुआ और सदक़ा (दान करना) मरने वाले को पहँचता है"।

(अख़बार बदर, 14 मार्च, 1904 ई.)

फ़िर फ़रमाया :-

''क़ुर्आन शरीफ़ जिस तर्ज़ से घेरा बाँध कर पढ़ते हैं ये सुन्नत से साबित नहीं। मुल्ला लोगों ने अपनी आमदनी के लिये ये रिवाज जारी किए हैं"।

(अलहकम, 10 नवम्बर 1907, व हवाला अलफ़ज़ल, 12 मई 1940 ई.)

मुरदों को सवाब पहँचाने के लिये खाना पकाना

कुछ लोग किसी मरे हुए रिश्तेदार की रूह को सवाब (पुण्य) पहँचाने की नीयत से एक ख़ास दिन निर्धारित करके लोगों को खाना खिलाते हैं। कुछ लोग लगातार चालीस दिन तक खाना खिलाते हैं। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का फ़रमान है :-

''खाना खिलाने का सवाब मुरदों को पहुँचता है। पिछले बुज़ुर्गों को सवाब पहुँचाने की ख़ातिर अगर खाना पकाकर खिलाया जाये तो ये जायज़ है लेकिन हर एक नीयत पर निर्भर है। अगर कोई शख़्स इस तरह के खाने के लिए कोई ख़ास तारीख़ निर्धारित करे और ऐसा खाना खिलाने को अपने लिये परेशानी दूर करने वाला ख़्याल करे तो यह एक बुत है, और ऐसे खाने का लेना देना सब हराम और शिर्क़ में दाख़िल है"।

(अख़बार बदर, 18 अगस्त 1907 ई.)

उर्स मनाना

आज कल मज़ारों (विशेष क़ब्रों) पर उर्स मनाने का बड़ा रिवाज है। इन अवसरों पर क़ब्रों के चक्कर लगाये जाते हैं, उन पर चादरें चढ़ाईं जाती हैं, क़ब्रों को चूमा जाता है औरतें और मर्द नाचते हैं, मज़ारों को खूब सजाया जाता है, तवायफ़ें बुलवाकर गीत सुने जाते हैं, इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

''शरीयत तो इस बात का नाम है कि जो कुछ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिया है उसे ले ले, और जिस बात से मना किया है उस से हटे। लोग इस वक़्त क़ब्रों के फ़ेरे लगाते हैं, उनको मस्जिद बनाया हुआ है। उर्स वग़ैरह ऐसे जल्से न नुबुव्वत का तरीक़ा है न, सुन्नत है"।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द पाँच, पृ. 165)

बारह वफ़ात

हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं :-

''ऐसे उर्स में चाहे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही हो बिदअत नज़र आती है... ख़ुद स्वर्गीय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कभी बारह वफ़ात का जल्सा अपने घर में हरगिज़ नहीं किया। अत: मैं अपनी ज़िन्दगी में कुछ दिनों के लिये बिदअतों को गवारा नहीं कर सकता, और ऐसी बातों में बिदअतों के ख़तरनाक ज़हरों से बचने का ध्यान रखो"।

(21-28 फ़रवरी 1913)

मीलाद ख़्वानी

एक शख़्स ने मीलाद ख़्वानी के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सवाल किया - हुज़ूर ने फ़रमाया :-

''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तज़किरह (ज़िक्र करना) बहुत उत्तम है, बल्कि हदीस से साबित है कि नबियों और वलियों की याद से रहमत उतरती है, और ख़ुद ख़ुदा ने भी नबियों के तज़किरह की प्रेरणा दी है लेकिन अगर इसके साथ ऐसी बुरी रस्में मिल जायें जिन से तौहीद (एक ख़ुदा पर यक़ीन) में रुकावट पैदा हो तो वह जाइज़ नहीं"।

फ़िर फ़रमाया :-

''मीलाद के वक़्त खड़ा होना जाइज़ नहीं। इन अंधों को इस बात का ज्ञान ही कब होता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रूह आ गयी है, बल्कि इन मज्लिसों में तो तरह-तरह के बदनीयत और बदमाश लोग होते हैं। वहाँ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रूह कैसे आ सकती है, और कहाँ लिखा है कि रुह आती है"।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द पाँच, पृ. 211-12)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

जो इंसान भी दुनिया में आया, उसने एक दिन यहां से विदा होना है लेकिन भाग्यशाली होते हैं वे जिन्हें अल्लाह तआला धर्म की सेवा की भी तौफ़ीक़ प्रदान करे और मानवता की सेवा की भी तौफ़ीक़ प्रदान करे।

सिलसिला के पुराने सेवक और मुबल्लिग़ सिलसिला आदरणीय बशीर रफीक़ खान साहिब और फज़ल उमर हस्पताल की वाक्फ ज़िन्दगी डाक्टर आदरणीया नुसरत जहां साहिबा पुत्री आदरणीय मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान साहिब की वफात।

मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 21 अक्तूबर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुल इस्लाम, टोरंटो,कैनेडा।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

आज मैं जमाअत के दो सेवकों का उल्लेख करूंगा जिनकी पिछले दिनों वफात हुई है जिनमें से एक आदरणीय बशीर अहमद रफीक़ ख़ान साहिब हैं और दूसरी फज़ल उमर अस्पताल की गाइनी विभाग की डॉक्टर नुसरत जहां साहिबा हैं। जो इंसान भी दुनिया में आया, उसने एक दिन यहां से विदा होना है लेकिन भाग्यशाली होते हैं वे जिन्हें अल्लाह तआला धर्म की सेवा की भी तौफ़ीक़ प्रदान करे और मानवता की सेवा की भी तौफ़ीक़ प्रदान करे।

बशीर रफीक़ ख़ान साहिब पुराने, सिलसिला के सेवक मुबल्लिग़ सिलसिला थे। फिर विभिन्न प्रशासनिक कार्यों में भी उन्हें नियुक्त किया गया। बड़े उत्तम रूप से अपने कर्तव्यों का आयोजन करते रहे। उन की 11 अक्तूबर 2016 ई को लगभग 85 साल की उम्र में लंदन में वफात हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से बी.ए किया। फिर शाहिद की डिग्री जामियतुल मुबश्शरीन से 1958 ई में प्राप्त की। यह परिवार पुराना अहमदी परिवार है। उनकी मां का नाम फातिमा बी बी था जो हज़रत मौलाना मुहम्मद इलियास ख़ान साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बड़ी बेटी थीं। उनके पिता का नाम दानिशमन्द ख़ान था। वह 1890 ई के लगभग पैदा हुए और साहिब रउया व कशोफ आदमी थे। बशीर रफीक़ ख़ान जन्मजात अहमदी थे। आप के पिता ने 1921 ई में अहमदियत स्वीकार की थी जिस पर गांव वालों ने उनका बहिष्कार कर दिया। उनके पिता के बारे में हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने एक ख़त बशीर ख़ान साहिब को लिखा था कि आप का ख़त हमेशा आप के बुज़ुर्ग पिता की याद दिलाकर उनके लिए दुआ की ओर आकर्षित करता है। कथनी और करनी में विरोधाभास मुक्त, ईमानदार और सच्चाई की मूर्ति थे। यह है वह विशेषताएं जो एक अहमदी की, एक मोमिन की शान है। लिखते हैं कि मुझे उनसे गहरा संबंध था और है और इसकी अभिव्यक्ति हमेशा दुआ के मामले में होती रहती है। अल्लाह तआला उन्हें अपनी रहमत में रखे और उनकी सारी संतान को अपना वास्तविक वारिस बनाए। उनकी शादी 1956 ई में सलीमा नाहीद साहिबा से हुई जो अब्दुर्रहमान ख़ान की बेटी थीं जो ख़ना अमीर ख़ान साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बेटे थे। उनकी औलाद में तीन बेटे और तीन बेटियां हैं। 1945 ई में ख़ान साहिब तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल कादियान में दाख़िल हुए और उस समय उनकी उम्र चौदह साल थी उन्हीं दिनों एक ख़ुत्बा में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने अहमदियत के युवाओ को ज़िन्दगी वक्फ करने की तहरीक की तो जुम्अः की नमाज़ के खत्म होते ही कई युवाओं ने अपने नाम पेश किए और उन ख़ुश नसीब युवाओं में यह भी शामिल थे और फिर उस ज़माना में नियमित व्यवस्था इस तरह नहीं थी तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो का व्यक्तिगत ख़त उन्हें मिला कि आप का वक्फ स्वीकार किया जाता है। 1947 ई तक जब तक विभाजन नहीं हुआ उन्होंने कादियान में पढ़ाई जारी रखी। मैट्रिक पास करने के बाद या शायद विभाजन से कुछ समय पहले अपने क्षेत्र में चले गए थे। कॉलेज में जब प्रवेश लिया तो अचानक एक दिन यह कहते हैं मुझे प्राइवेट सेक्रेटरी का ख़त मिला कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने फरमाया है कि कादियान में एक पठान छात्र था जिसने ज़िन्दगी वक्फ की थी लेकिन उसका नाम नहीं पता कौन था और विभाजन की वजह से रिकॉर्ड भी गुम हो गया या रबवा में मौजूद नहीं। उस का पता करें। 1945 ई में पढ़ने वाले छात्रों में से वह कौन था जिसने वक्फ किया था। संयोग से उनके घर ख़त आया उन्होंने लिखा कि वह मैं ही था। अत: हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने उन्हें आदेश दिया कि तुरंत रबवा हाज़िर हो जाएँ और तालीमुल इस्लाम कॉलेज लाहौर में प्रवेश लो और बी.ए करो। उस समय हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस वहां के प्रिंसिपल थे। कहते हैं कि 1953 ई में जब परीक्षा की तैयारी में व्यस्त था अचानक अहमदियों के विरुद्ध दंगे भड़क उठे और इसी अवस्था में हम ने परीक्षा भी दी और इस परीक्षा का जो नतीजा निकला इससे कहते हैं मुझे बड़ा सख़्त सदमा हुआ क्योंकि मैं फेल हो गया लेकिन कहते हैं कि साथ ही मुझे भी परेशानी थी कि अगर मुझे फेल ही होना था तो अल्लाह तआला ने तो परीक्षा से पहले मुझे पर्चा भी दिखा दिया था कि यह पर्चा आएगा और वह आया भी और हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने भी बड़े विश्वसनीय तौर से फरमाया था कि तुम पास हो जाओगे। कहते हैं मेरा ईमान इस बात पर कई बार अस्थिर होने लग जाता था। अख़बारों में परिणाम आया बड़ा उदास बैठा था मेरे पिताजी ने पूछा, क्या कारण हुआ? तो मैंने वजह बताई तो उन्होंने कहा कि कोई बात नहीं। फिर से परीक्षा दे देना क्योंकि दंगों की वजह से पंजाब में तैयारी नहीं कर सके होगे। कुछ दिन बीते तो उनके पिता ने कहा कि जब भी तुम्हारे लिए दुआ करता हूँ तो मुझे तो यही आवाज़ आती है कि बशीर अहमद तो पास हो चुका है और जो मैंने कॉलेज का परिणाम दिखाया तो ख़ैर चुप हो जाते थे। फिर कुछ दिन बाद कहते मुझे तो यही जवाब आ रहा है कि तुम पास हो चुके हो। एक दिन कहते हैं संयोग से डाक में कई ख़त आ गए। उसमें एक ख़त विश्वविद्यालय की ओर से भी था जो मैंने खोला तो मैं हैरान रह गया। विश्वविद्यालय ने कहा कि ग़लती से तुम्हें फेल घोषित कर दिया गया था अब पर्चों की पुन: जाँच के बाद तुम पास करार दिए गए हो। कुछ दिनों के बाद यह कहते हैं कि मैं ख़लीफतुल मसीह सानी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हुज़ूर से पूरी घटना बयान की तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने फरमाया कि मैंने तुम्हें बताया था कि मुझे दुआ के बाद तुम्हारे पास होने की ख़बर दी गई है जिसकी सूचना मैंने तुम्हें दी थी कि तुम पास हो जाओगे। तो यह जो रिज़ल्ट आया है स्पष्ट है। ख़ुदाई बात को कौन टाल सकता है। अल्लाह तआला ने यह फैसला किया तो बताया था। यह तो मजाक़ बन जाता कि अल्लाह तआला हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी को भी और इनके पिता को भी यह बता रहा है और रिज़ल्ट और हो। आख़िर वही बात सही साबित हुई जो अल्लाह तआला ने बताई थी। इसके बाद हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया कि जामिया में दाख़िल हो जाओ और शाहिद करो। मेरी तो इच्छा है कि तुम्हें मैदान तब्लीग़ में भिजवाया जाए। कहते हैं कि हमारी जामिया कि कक्षा को यह विशेष सम्मान भी प्राप्त था हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी भी कई बार वहाँ आए और विभिन्न ज्ञानों में महारत हासिल करने के तरीके पर ध्यान दिलाया। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने विशेष रूप से इस ओर ध्यान दिलाया कि हर छात्र को अपनी लाइब्रेरी बनानी चाहिए और किताबें ख़रीदने की आदत डालनी चाहिए और यह बात ऐसी है जो हर जामिया के छात्र को हमेशा याद रखनी चाहिए। अब दुनिया में अनगिनत विश्वविद्यालय हैं वाकफीन जिन्दगी हैं उन्हें अपनी लायब्रेरी बनानी चाहिए। पिछले दिनों मुरब्बियान की मीटिंग लंदन में थी वहां भी मैंने उन्हें कहा था कि मुरब्बियान की अपनी लायब्रेरी भी होनी चाहिए केवल जमाअत की लायब्रेरी पर भरोसा न करें। कहते हैं जामियतुल मुबश्शरीन की शैक्षणिक संस्था

से शाहिद की डिग्री लेकर मैं वकालत तबशीर में हाज़िर हो गया। आदरणीय मिर्ज़ा मुबारक अहमद साहिब वकीलुल तबशीर थे। मुझे हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी के पास ले गए तो आपने फ़रमाया कि इसे इंग्लैण्ड भिजवा दिया जाए। फिर कहते हैं इंग्लैण्ड जाने के लिए भी वकीलुल तबशीर मुझे अपने साथ ले गए। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी से मुलाकात हुई और विस्तृत हिदायतें लिखवाईं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने दुआएं दीं। विदा किया। गले लगाया और इंग्लैण्ड 1959 ई में आप की नियुक्ति हुई वहां पहुंच गए और मस्जिद फज़ल लंदन में नायब इमाम के रूप में सेवाओं का सिलसिला शुरू हुआ। कहते हैं कि 1959 ई में जब इंग्लैण्ड के लिए रवाना हुए तो एक दिन मौलाना जलालुद्दीन साहिब शम्स की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप से कुछ नसीहतें करने का अनुरोध किया। मौलाना जलालुद्दीन साहिब शम्स भी बड़ा लंबा समय इमाम मस्जिद लंदन रहे थे तो उन्होंने नसीहतें कीं और कहा कि एक नसीहत मैं तुम्हें करता हूँ और मैंने अपनी ज़िन्दगी में इस नसीहत से बड़ा लाभ उठाया है। शम्स साहिब कहते हैं कि मैं सीरिया में मुबल्लिग़ था तो मेरे माध्यम से एक धनी परिवार के एक व्यक्ति श्री मुनीर हसन साहिब ने अहमदियत स्वीकार कर ली। पुराने अहमदी थे। बड़े निष्ठावान अहमदी थे। इसके बाद ही सीरिया में फिर जमाअत फैली है। कहते हैं और फिर तेज़ी से उनकी धर्म की सेवा का जोश और उत्साह बढ़ता गया। मुनीर हसन साहिब दैनिक असर के बाद मिशन हाउस आ जाते थे। सीरिया में उस समय मिशन हाऊस होता था। उस समय प्रतिबंध नहीं थे शम्स साहिब कहते हैं और बड़े शौक से मेरे लिए वह भोजन तैयार करते थे और उस पर बड़ा जोर देते थे और फिर शाम को हम दोनों वह ख़ाना खाया करते थे। एक दिन जब हम ख़ाने पर बैठे तो मैंने मुनीर हसन साहिब ने कहा कि आज सालन में नमक अधिक है भविष्य में ध्यान दें। मुनीर हसन साहिब कुछ देर चुप रहे फिर बोले मौलाना साहिब आप तो जानते हैं कि मेरे घर में सेवा के लिए कई कर्मचारी मौजूद हैं। बड़े अमीर आदमी थे। यहां तक कि जब मैं शाम को घर जाता हूँ तो मेरे बूट के तसमें भी मेरे नौकर आकर खूलते हैं। मैंने अपने घर में कभी एक कप चाय भी ख़ुद नहीं बनाई। यहां आकर आप के लिए जो ख़ाना बनाता हूँ वह केवल अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए करता हूँ वरना कहाँ मैं और कहाँ सालन की तैयारी। इसलिए अगर मुझ से मसाला कम या ज्यादा डालने में कोई कोताही हो जाया करे तो माफ कर दिया करें कि ख़ाना बनाना मेरा काम नहीं है। यह घटना बता कर हज़रत मौलाना शम्स साहिब फरमाने लगे कि इस घटना से मैंने यह सबक सीखा कि हमारी सेवा अर्थात मुबल्लिग़ों की सेवा जो दोस्त बहुत ख़ुशी से करते हैं वह हमारी ज़ात की वजह से कभी नहीं करते बल्कि अल्लाह तआला की ख़ुशी और सिलसिला अहमदिया से प्यार में करते हैं इसलिए हमें हमेशा यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि जितनी भी कोई सेवा हमारी करता है यह उसका हम पर एहसान है अगर उनसे कोताही हो जाए तो हमारा कोई अधिकार नहीं कि उनसे पूछताछ या उन्हें टोकें। बहरहाल अजीब अजीब वफ़ा से भरे हुए ईमानदारी से भरे हुए लोग अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को प्रदान फरमाए और आरम्भ से अब तक प्रदान करता चला जा रहा है।

यह कहते हैं कि 1964 ई में आदरणीय चौधरी रहमत ख़ान जो वहाँ लंदन मस्जिद के इमाम थे बीमारी की वजह से वापस गए तो उन्हें मस्जिद फज़ल का इमाम नियुक्त किया गया। 1960 ई में बशीर रफीक़ साहिब ने अंग्रेज़ी रसाला मुस्लिम हेराल्ड भी जारी किया और शुरू में दस पन्नों का था। संपादक भी ख़ुद थे और बाकी काम भी ख़ुद करते थे। 1962 ई में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब की तहरीक पर अख़बार अहमदिया के नाम से पन्द्रह दिवसीय अख़बार प्रकाशित करना शुरू किया। आप बताते हैं कि इस अखबार का संस्थापक भी था और एक लंबे समय तक संपादक भी होने का सौभाग्य प्राप्त रहा और नियमित इसके लिए लेख भी लिखते रहने की तौफीक़ मिली। बड़े ज्ञानी आदमी थे। उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जारी रिसाला रिव्यू ऑफ रिलेजनज़ के संपादन का भी श्रेय मिला। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने 1967 ई से लेकर अपनी ख़िलाफ़त में यूरोप के आठ दौरे किए उनमें से सात दौरों में मौलाना बशीर रफीक़ साहिब हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस के काफिला में शामिल रहे। दो बार यात्राओं में बतौर निजी सचिव भी शामिल होने की तौफीक मिली। 1970 ई में वापस पाकिस्तान आए और हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस के निजी सचिव के रूप में नियुक्त हुए। 1971 ई में फिर लंदन में लौट आए और इमाम के रूप में अपनी पिछली ज़िम्मेदारियों को पुन: ग्रहण किया। 1976 ई में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस के साथ बतौर उनके निजी सचिव के संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के दौरे पर जाने का भी उन्हें सौभाग्य मिला। मई 1978 ई में जो अंतरराष्ट्रीय कसरे सलीब सम्मेलन लंदन में हुई थी इसमें शामिल होने के लिए हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस आए थे और इस की व्यवस्था को पूर्ण करने के लिए जमाअत ब्रिटेन के दोस्तों, मज्लिस आमिला इंग्लैण्ड और सम्मेलन कमटी ने दिन रात एक कर के काम किया और टीम वर्क का उच्च नमूना दिखाया। उनकी निगरानी मैं यह काम हुआ। 1964 ई से 1970 ई और फिर 1971 ई से19 79 ई तक इमाम मस्जिद लंदन रहे। मुस्लिम हेराल्ड रसाला के संस्थापक संपादक 1961 से 1979 ई तक रहे। निजी सचिव हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस 1970 ई से 1971 ई फिर नवंबर 1985 ई में आप वकील दीवान तहरीक जदीद नियुक्त हुए। 1987 ई तक रहे वकीलुल तसनीफ रबवा, 1982 ई से 1985 ई एडीशनल वकीलुल तबशीर रबवा, 1983 ई से1984 ई तक एडीशनल वकीलुल तसनीफ लंदन, 1987 ई से 1997 ई संपादक रिव्यू ऑफ रिलेजनज़, 1983 ई से 1985 ई तक चेयरमैन बोर्ड आफ एडीटरज़ रिव्यू ऑफ रिलेजनज़, 1988 ई से 1995 ई तक मेम्बर सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान, 1971 ई से 1985 ई तक सदस्य इफ़्ता कमेटी, 1971 ई से 1973 ई तक मेम्बर बोर्ड क़ज़ा, 1984 ई से 1987 ई तक और इसी तरह कुछ सांसारिक पोस्टों पर भी काम की भी उन्हें तौफीक मिली। रोटरी क्लब के सदस्य थे और उप प्रधान थे। फिर प्रधान रोटरी क्लब भी नियुक्त हुए। 1968 ई में लाइबेरिया के राष्ट्रपति श्री टिब मैन के निमंत्रण पर बतौर मुख्य अतिथि उन्हें बुलाया गया और लाइबेरिया का मानद प्रमुख नियुक्त किया गया।

उनके बेटे लिखते हैं कि नियमित तहज्जुद नमाज़ अदा करते और बड़े प्रावधान से दुआ किया करते थे यहां तक कि नाम लिखकर दुआ करते ताकि किसी का नाम भूल न जाएं। अक्सर दरूद भेजने वाले, चंदे के महत्त्व को हम पर बड़ा स्पष्ट किया। उनके भाई कर्नल नज़ीर उनकी घटना लिखते हैं कि हज़रत ख़लीफा सानी ने जब बुलाया तो तब उन्होंने लॉ कॉलेज में दाखिला ले लिया था तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी का जो ख़त आया उनके पिता को कि उन्हें भेजें तो उन्होंने कहा कि मैं वकालत करके जमाअत की बेहतर सेवा कर सकता हूँ। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने इसके जवाब में लिखा कि हमें धार्मिक वकील चाहिए सांसारिक नहीं। जो रुतबा, सम्मान, दौलत और शोहरत वह दुनिया में देखना चाहता है अल्लाह तआला वह सब कुछ उसे वक्फ ज़िन्दगी की बरकत से दे देगा। कहते हैं पिताजी ने जब यह ख़त भाई को दिया तो ख़त पढ़कर बिना किसी सवाल के अपना सामान उठाया और रबवा को चले गए और फिर यह देखें कि अल्लाह तआला ने शब्दों को भी कैसे पूरा किया। वकील बनते तो सांसारिक वकील थे। सांसारिक पुरस्कार भी मिले धार्मिक सेवा का भी मौका मिला और उनके यह भाई लिखते हैं कि जो ख़लीफा सानी ने लिखा था वह सब कुछ वक्फ ज़िन्दगी की बरकत से मिला सम्मान भी मिला, शोहरत भी मिली और सब कुछ मिला। अल्लाह तआला की कृपा से बड़ा भरपूर जीवन उन्होंने जिया है। ख़िलाफत से भी उनका बड़ा वफ़ा का संबंध था और उन्हें लम्बे समय दिल की बड़ी तकलीफ थी। उनका दिल का ऑपरेशन भी हुआ। एक समय में तो बिल्कुल निराशा की स्थिति थी तो अल्लाह तआला ने नया जीवन दिया। इस बीमारी की वजह से उन्हें कमज़ोरी भी बहुत होती थी लेकिन बड़ा नियमित यह न केवल मुझे वफ़ा का ख़त लिखते थे और ईमानदारी व्यक्त करते थे बल्कि जहाँ भी उन्हें पता लगता कि मैं जिस फंगशन में शामिल हो रहा हूँ यह निश्चित रूप से वहाँ आया करते थे और फिर वाकर के माध्यम से या जिस तरह भी कई बार कमज़ोरी में मैंने उन्हें देखा है जुम्ओं पर ज़रूर शामिल हुआ करते थे। चल कर आते थे। अल्लाह तआला उनसे माफी और दया का व्यवहार करे और उन के स्तर बढ़ाता चला जाए और उनकी नस्लों को भी ईमानदारी तथा वफा से जमाअत के साथ संबंध रखने और उनके नक्शे कदम पर चलने की शक्ति प्रदान करे।

दूसरा उल्लेख जैसा कि मैंने कहा आदरणीया डाक्टर नुसरत जहां मालिक साहिबा का है जो हज़रत मौलाना अब्दुल ख़ान की बेटी थीं। 11 अक्तूबर 2016 ई को लंदन में वफात पा गईं थीं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। थीं तो यह रबवा में लेकिन ब्रिटिश नेशनल थीं। प्रत्येक साल आया करती थीं कुछ तो अपनी व्यावसायिकता महारत बढ़ाने के लिए भी विभिन्न अस्पतालों में जाती थीं और कुछ समय से बीमार थीं। कुछ इलाज भी करवा रही थीं इसलिए यहां थीं और यू.के जलसा के बाद एकदम उन्हें संक्रमण हुआ। छाती की संक्रमण बढ़ता चला गया फिर फेफड़ों ने काम करना बंद कर दिया लेकिन अल्लाह तआला ने फज़ल फरमाया काफी ठीक हो गई थीं और डॉक्टर आशावादी भी थे लेकिन साथ ही यह खतरा भी था कि अगर दोबारा संक्रमण का हमला हुआ तो बचना मुश्किल है लेकिन अल्लाह तआला की तकदीर थी दोबारा एक दिन अचानक हमला हुआ और कुछ ही घंटों में

इस बीमारी के बाद उनकी वफात हो गई।

उन का जन्म 15 अक्तूबर 1951ई है। कराची में पैदा हुईं। डॉक्टर नुसरत जहां साहिबा के पिता मुहतरम मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान भी पुराने सिलसिला के ख़ादिम थे। हज़रत ख़ान जुल्फिकार अली ख़ान के बेटे थे उनकी मातृभूमि नजीब आबाद ज़िला बिजनौर थी जो यू.पी में स्थित है उन्होंने अर्थात डॉक्टर नुसरत जहां साहिबा के दादा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की 1900 ई में ख़त के माध्यम से बैअत की और फिर 1903 ई में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हज़रत मौलाना जुल्फिकार अली ख़ान गौहर साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार अपने बेटे मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान को बचपन से ही धर्म के लिए वक्फ कर दिया था यद्यपि उनका जन्म उस के बाद का है। 1911 ई में उनका जन्म हुआ। मौलाना में मदरसा अहमदिया में प्रवेश करने के बाद पंजाब विश्वविद्यालय से मौलवी फाज़िल 1932 ई में पास किया। इसके बाद उन्हें एक अच्छी नौकरी मिल गई लेकिन मौलवी अब्दुल मालिक ख़ान के पिता ने उन्हें लिखा कि मैंने तुम्हें इसलिए नहीं पढ़ाया कि तुम दुनिया कमाओ। किसी एक को धर्म भी कमाना चाहिए। यह ख़त मिलते ही मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान ने इस्तीफा दिया और कादियान वापस आकर मुबल्लिग़ीन जमाअत में शामिल हो गए और यही ईमानदारी और वफा की भावना थी जो डॉक्टर नुसरत जहां में भी था। यू.के से उन्होंने अध्ययन किया। एम.बी.बी.एस पाकिस्तान से किया फिर सपेशलाईज़ यू.के से किया और कहीं भी वह जातीं तो लाखों रुपए प्रतिदिन कमा सकती थीं लेकिन धर्म की सेवा के लिए मानवता की सेवा के लिए छोटे से शहर में, रबवा में आकर बस गईं और अस्पताल को उस समय जो भी ज़रूरत थी उस ज़रूरत को पूरा किया और फिर सारी उमर नि:स्वार्थ होकर ऐसी सेवा की जो बहुत गुणवत्ता पर पहुंची हुई थी उनके बारे में कई लोगों ने मुझे अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है सब का वर्णन कठिन है कुछ मैं आगे जाकर वर्णन करूँगा। उनकी एक ही बेटी हैं आयशा नज़हत, वह इस समय यू.के में ही अपने पति के साथ रहती हैं। उनके तीन बच्चे हैं। जैसा कि मैंने बताया कि डॉक्टर साहिबा ने एम.बी.बी.एस पाकिस्तान से फातिमा जिन्ना मेडिकल कॉलेज से किया फिर इंगलिस्तान से आर.सी.ओ.जी यानी गानिक विशेषज्ञ का कोर्स किया royal college of Obstetricians and Gynaecologists। 1985 ई में फज़ल उमर अस्पताल में अपनी सेवाएं शुरू कीं और 20 अप्रैल 1985 ई से अब तक यह सेवा करती रहीं। जैसा कि मैंने कहा बीमार थीं। उन्हें कुछ जिगर की बीमारी थी उसके इलाज के सिलसिला में ये छुट्टी लेकर 5 अप्रैल को लंदन आई थीं। इलाज हो रहा था और इलाज अल्लाह तआला की कृपा से सफल हो गया था फिर जलसा के बाद उन्हें चेस्ट संक्रमण हुआ इस से भी कुछ हद तक लग रहा था कि वापसी है लेकिन फिर अचानक हमला हुआ और वफात हुई।

उनके दामाद मकबूल मुबश्शिर साहिब कहते हैं। ख़ुदा पर बहुत बहुत अधिक भरोसा था। इबादत का ज़ौक था। कुरआन से मुहब्बत थी। ख़िलाफत से गहरी प्रतिबद्धता थी। पूरी तरह दिल की गहराई से ख़िलाफत की आज्ञाकारी थीं। मानवता की सेवा, मरीज़ का ठीक होना और आराम उनकी पहली प्राथमिकता थी और जो बातें यह वर्णन कर रहे हैं मैं व्यक्तिगत रूप से भी गवाह हूँ यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है बल्कि वास्तव में ये बातें हैं उन में थीं। प्रत्येक सर्जरी से पहले और इलाज से पहले दुआ करती दैनिक सदका देतीं। रबवा में मौजूद बुज़ुर्गों को अपने रोगियों के ठीक होने के लिए कहतीं। कई ग़रीब मरीज़ों का अपनी जेब या करीबी दोस्तों के खर्च से इलाज करातीं। जमाअत के पैसे का भी बहुत दर्द रखती थीं हर समय कोशिश करतीं कि कम से कम खर्च हो। जमाअत का एक रुपया भी बर्बाद न हो। यह कहते हैं कि मैं लाहौर में निजी अस्पताल में काम करता था तो मुझ से पूछा कि अमुक चीज़ आप ने किस कंपनी से किस कीमत पर ख़रीदी है और अमुक दवा तुम किस कंपनी से किस कीमत पर ख़रीदते हो तो अगर उचित होती तो वही चीज़ फज़ल उमर अस्पताल के लिए इन संस्थाओं से कम कीमत पर ख़रीदवा देतीं। माता पिता से मुहब्बत थी उनकी सेवा भी बहुत की। उसकी माँ की लंबी बीमारी के बावजूद उनकी उन्होंने बहुत सेवा की। अपने फर्ज़ों को भी पूरा किया और मां की सेवा भी की और अपनी बीमारी के भी अंतिम दिनों में बड़ी हिम्मत से गुज़ारे। अंतिम बीमारी के दौरान अस्पताल में लगभग दो महीने रही हैं हमेशा यही कहती थीं कि तिलावत सुनाओ। घर में भी बच्चों को दुआ और तिलावत की ताकीद करतीं। कोई धर्म की बात बच्चों में देखती थीं, तिलावत करते देखतीं तो ख़ुश होतीं और पुरस्कार देती और दुआ देतीं। मुबश्शिर साहिब कहते हैं हमारी बेटी जब बारह साल की हुई तो उसे सिर ढांप कर पर्दे का ख्याल रखने की हिदायत करतीं और हज़रत अम्माजान और अन्य बुज़ुर्गों के हवाले से छोटी मगर महत्त्वपूर्ण बातें बच्चों को उदाहरण या घटना के रूप में सुनातीं। ख़ुद भी पर्दे की बहुत पाबंद थीं। इसलिए अगर माता पिता और उनके बड़े बच्चों को यह नसीहत करते रहें तो लड़कियों में जो हिजाब न लेने की शर्म है वह समाप्त हो जाती है बल्कि साहस पैदा होता है।

डॉक्टर नुसरत मज़ूका साहिबा फज़ल अमर अस्पताल में हैं। कहती हैं डॉक्टर नुसरत जहां साहिबा के साथ मेरा लगभग अठारह साल से संबंध था और मैं हाउस जॉब करते ही गाइनी विभाग फज़ल उमर अस्पताल का हिस्सा बन गई। मेरा सारा व्यावसायिक प्रशिक्षण डॉक्टर साहिबा ने किया। वह एक योग्य शिक्षक थीं। हमें जीवन के हर क्षेत्र में उनसे मार्गदर्शन मिलता था। मज़बूत और पूर्ण थीं। ख़ुदा तआला ने उन्हें असाधारण क्षमताओं से सम्मानित किया था। वह एक आज्ञा पालन करने वाली और एक हमदर्द बेटी थीं और एक शफीक माँ भी। एक disciplined शिक्षक भी थीं और ग़म दूर करने वाली बहन भी और दोस्त भी। कहती हैं कि उनका पूरा जीवन कुरबानी से भरा हुआ है उन्होंने जमाअत की सेवा करने के लिए अपने व्यक्तिगत जीवन को बहुत पीछे छोड़ दिया। उनकी प्राथमिकताएं साधारण इंसानों से बहुत अलग थीं। वह कहती थीं कि मेरे दो बच्चे हैं एक तो मेरी बेटी है और दूसरा मेरा विभाग है। हर समय गाइनी विभाग की तरक्की के लिए कोशिश करती रहतीं। रोगियों के लिए मेहनती और प्रतिबद्ध रहतीं और विशेष रूप से जो जमाअत के कार्यकर्ता हैं, ग़रीब कार्यकर्ता उनका बहुत ख्याल रखतीं। अगर किसी की पत्नी बीमार होती तो बार बार फोन करके भी उनकी बीमारियों का पूछतीं। अपने स्टाफ से बड़ा प्रेम करतीं। अगर कभीउन से अधिक काम करवातीं, अगर किसी समय किसी मरीज़ के कारण अधिक काम करना पड़ जाता तो घर से उनके लिए ख़ाना भिजवातीं। किसी कठिन समय में उनकी मदद करने की कोशिश करतीं और यह तो हर एक ने लिखा है कि ख़िलाफत से बड़ा गहरा संबंध था और यही वास्तविकता है, असाधारण संबंध था। कहती हैं पिछले साल से मुझे हर चीज़ में शामिल रखतीं और हर महत्त्वपूर्ण बात में मुझे शामिल करतीं तथा मुझे हर तरह की गाइनी सर्जरी भी सिखाई और यह भी व्यक्त करतीं कि मेरे पास समय बहुत कम है, कहती हैं उस समय तो मैंने ध्यान नहीं दिया था कि उनका क्या मतलब है क्योंकि बड़ी सक्रिय थीं लेकिन अब उनकी वफात के बाद समझ आई कि उन्हें अपनी बीमारी की वजह से भी कुछ अंदाज़ा था। यह कहती हैं कि वह हमें छोड़ के चली गईं। रबवा के रहने वालों पर उनके असंख्य उपकार हैं और आज हर आंख आंसू बहा रही है और हर दिल दुखी है। बहुत सारे ख़त मुझे आए हैं उन्होंने बड़ी हकीकत लिखी है।

डॉक्टर अमतुल हई साहिबा जो घाना में अस्पताल में गाइनी डॉक्टर हैं। वह लिखती हैं कि मेरा भी जो प्रारंभिक प्रशिक्षण है वह डॉ नुसरत जहां ने की थी और फिर जब मैं घाना गई तो स्थायी मेरे साथ वाट्स अप और ईमेल आदि पर संपर्क था कोई भी गाइनी की समस्या होती तो बड़ी ख़ुशी से मुझे जवाब देतीं और मार्गदर्शन करतीं और हर मुश्किल समय में यही कहा करती थीं कि समय के ख़लीफा को दुआ के लिए लिखों। फिर यह कहती हैं जब मैं डॉक्टर साहिबा के साथ काम करती थीं तो छोटी-छोटी बातों पर भी उनका ध्यान रहता था। कहती हैं मुझे याद है कि जब भी वह कोई अधिक लाइट जलती देखतीं तो तुरंत बंद कर देतीं कि जमाअत का पैसा बेवजह बर्बाद क्यों हो रहा है। फिर शादी को बनाए रखने की ओर ध्यान दिलाते हुए कहतीं कि जो ख़ून के रिश्ते होते हैं वह कभी नहीं टूटते लेकिन जीवन साथी का रिश्ता मुहब्बत तथा प्यार का होता है वह न रहे तो कुछ भी नहीं रहता और यह बड़ा अच्छा नुस्ख़ा है जो उन्होंने बताया है इस पर हर जोड़े को अनुकरण करना चाहिए। कहती हैं जब पिछले दिनों बीमारी से पहले लंदन में अस्पताल में भर्ती होने से कुछ दिन पहले मुझे फोन किया कि नया गाइनी थिएटर रबवा में बना है और पता नहीं मैं जा कर देख सकती हूँ या नहीं। मुझे भी उन्होंने कहा था कि हो सकता है देर हो जाए इसलिए नाज़िर आला से इसका उद्घाटन करवा दें मैंने उन्हें हिदायत भेजी है क्योंकि लोगों से जमाअत के काम नहीं रुकते।

डॉक्टर नूरी साहिब रबवा में जो ताहिर हार्ट के इंचार्ज रहे हैं। वह कहते हैं कि पिछले नौ साल से अधिक समय से आदरणीया नुसरत जहां साहिबा के साथ फज़ल उमर अस्पताल के ज़ुबैदा बानी विंग और ताहिर हार्ट इंस्टीट्यूट में काम करने का मौका मिला। उनमें कुछ ऐसी विशेषताएं थीं जो आजकल बहुत कम डॉक्टरों में पाई जाती हैं। बहुत ही नेक, दुआ करने वालीं, उच्च नैतिकता वालीं, ख़ुदा तआला का भय

रखने वाली, अपने रोगियों के लिए दुआएं करने वाली, पर्दा का बारीकी से पालन करने वाली, कुरआन करीम का व्यापक ज्ञान रखने वाली, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदर्श पर पालन करने वाली महिला थीं और उन्होंने यहां भी यू.के में भी पढ़ाई की उसके बाद अपने अस्पतालों में यहाँ अपने ज्ञान में वृद्धि के लिए भी आती थीं लेकिन हमेशा उन्होंने घूंघट का पर्दा है और पूरा बुर्का पहना है और कभी कोई कंपलकस नहीं था और पर्दे के अंदर रहते हुए सारे काम भी किए। इसलिए वह लड़कियां जिन्हें यह बहाना होता है कि हम पर्दे में काम नहीं कर सकतीं उनके लिए यह एक नमूना थीं। फिर कहते हैं कि अपने काम में बहुत माहिर थीं। आधुनिक तकनीक के ज्ञान से परिचित थीं और अपने ज्ञान को नई आवश्यकताओं के अनुसार बढ़ाकर काम करती थीं। कभी अपने काम के दौरान समय की परवाह नहीं की और प्राप्त सुविधाओं से अवैध लाभ नहीं उठाया। चिंताजनक स्थिति के रोगियों के लिए अपनी छुट्टियों को कुर्बान करके बारह बारह घंटे काम करती रहतीं। कहते हैं मुझे याद है कि एक बार उन्होंने एक डिलिवरी के जटिल मामले में सारी रात जाग कर काम किया। उन्हें संभावित विकल्पों के बारे में तसल्ली से आगाह करतीं जिसकी वजह से मरीज़ों को उन पर विश्वास था। नियमों और सिद्धांतों का भरपूर पालन करती थीं अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से अंजाम देती थीं। कुछ लोग उनके ज़माना में कहते थे मुझे भी लिखते थे कि बड़ी सख्त हैं अगर सख्त थीं तो सिद्धांतों की वजह से लेकिन उनका दिल बहुत नरम था। उदारता और सहानुभूति भी उनकी एक प्रमुख विशेषता थी। डॉक्टर नूरी साहिब लिखते हैं कि एक बुजुर्ग महिला जो ताहिर हार्ट इंस्टीट्यूट में भर्ती रही थीं उन्होंने अपनी एक घटना सुनाई कि एक बार डॉक्टर साहिबा अपना काम खत्म करके कार में वापस घर जा रही थीं कि उन्होंने मुझे अस्पताल के पास अक्सा रोड पर देखा तो गाड़ी रोकी और मेरी गर्दन पर हाथ रखकर बहुत इत्मीनान से मेरी बीमारी का पूछा और वहीं दवा लिखी और फिर चली गईं। उनकी तकरीर की ताकत भी बहुत अच्छी थी। उनके पिता मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान भी बड़े उच्च स्तर के तकरीर करने वाले थे।

फोज़िया शमीम साहिबा सदर लजना लाहौर ने नूरी साहिब को बताया कि लाहौर में लजना को संबोधित करने के लिए बुलाया जाता तो उनके व्यक्तित्व और बयान का सभी पर समान रूप से प्रभाव पड़ता। आपकी बातों का केन्द्र बिन्दु अहमदियत ख़िलाफत और अल्लाह तआला के फज़लों का उल्लेख था। आप की वर्णन शैली में अपने पिता स्वर्गीय मौलाना अब्दुल ख़ान की झलक दिखती थी। ख़िलाफत से बहुत वफ़ा और ईमानदारी का संबंध था। बैठकों सेमिनार में और यहां तक कि वार्ड के दौरे के दौरान भी समय के ख़लीफा के उपदेशों का वर्णन करती रहती थीं। ख़िलाफत से आस्था केवल ज़बान तक सीमित नहीं थी बल्कि आप के कर्म से भी व्यक्त होती थी। सही अर्थ में एक रोल मॉडल महिला थीं।

डॉ मुहम्मद अहमद अशरफ साहिब लिखते हैं कि ख़ुदा तआला ने उन्हें बड़ी कुशलता और दूरदर्शिता दे रखी थी। कभी कभी रोगी के इलाज के सिलसिले में किसी प्रोसीजर को कुछ समय के लिए लेट कर देतीं और बाद में उनका यह फैसला सही निकलता। बहुत अच्छी प्रबन्धका थीं। अपने विभाग के काम पर पूरी पकड़ रखतीं। नियमों का पालन करतीं अपने रुख को डटकर व्यक्त करतीं। मामलों की गहरी छानबीन करना और उनसे भविष्य के लिए मार्गदर्शन लेना उनकी आदत थी। प्रशासनिक मामलों में रोब अपनी जगह लेकिन स्टाफ के प्रत्येक व्यक्ति से मुहब्बत और प्यार करती थीं और उनकी खुशी ग़मी में शिरकत करती थीं। सहानुभूति और करुणा का क्षेत्र रिश्तेदारों पड़ोसियों और स्टाफ और अस्पताल तक ही सीमित नहीं था बल्कि स्टाफ के व्यक्तियों के परिवार वालों, मरीज़ों और उनके परिजन सभी इस से लाभान्वित होते हुए कई बार हमने देखा। ज़रूरत मंदों का बहुत खुले दिल से और उनके आत्मसम्मान का ख्याल रखते हुए चुपचाप सहायता करतीं। यह डाक्टर साहिब कहते हैं कि महत्त्वपूर्ण मामलों का रिकॉर्ड सुरक्षित रखतीं और यह लिखते हैं कि विनम्र के ज्ञान के अनुसार आप के नेतृत्व में गाइनी विभाग का रिकॉर्ड जो है इस समय सबसे अच्छा और सुरक्षित स्थिति में है।

एक मुरब्बी फ़ुज़ैल अयाज़ साहिब लिखते हैं। वह लिखते हैं कि बेहद सहानुभूति करने वाली और ग़म दूर करने वाली थीं। 1989 ई में जब विनीत जामिया अहमदिया रबवा में सेवा की तौफीक पा रहा था तो अपने परिवार की, पत्नी और बेटी के साथ रबवा स्थानांतरित हुआ जब हमारा इलाज डॉक्टर साहिबा ने शुरू किया, प्रसव का इलाज था या कोई और समस्या थी। बहरहाल इलाज के दौरान बड़ी दयालु शफीक और सहानुभूति करने वाली थीं। एक वाकफे ज़िन्गदी मुरब्बी की पत्नी के कारण से मेरी पत्नी और हमारे बच्चे हमेशा आप के विशेष स्नेह और प्यार का हकदार रहे। कहते हैं हमारे चार बेटियां और एक बेटा है फज़ल उमर अस्पताल में ही उनका जन्म हुआ। कहते हैं हमेशा ही हम ने उन्हें बच्चों और उनकी मां के स्वास्थ्य के बारे में अपने से अधिक चिंतित पाया। जब हमारे घर चार बेटियां हो गईं तो एक बार तीसरी बेटी ने जिस की उम्र उस समय केवल चार साल थी उनके घर जाकर उनसे कहा कि हमें भी भाई लाकर दें तो डॉक्टर साहिबा ने उसे बहुत प्यार किया और कहा कि अल्लाह तआला से दुआ करो अल्लाह तआला तुम्हें भाई दे और फिर जब दोबारा उनके घर में उम्मीद हुई डॉक्टर साहिबा ने ख़ुद भी दुआ की हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे को दुआ के लिए लिखा और हर मिलने वाले को उनकी पत्नी के लिए दुआ करने के लिए कहती थीं। कहते हैं कि आख़िर अल्लाह तआला ने फज़ल फरमाया। जब बेटा पैदा हुआ तो ख़ुद आकर हमारे घर से मेरी बेटी को ले गईं कि लो तुम को अल्लाह तआला ने भाई दे दिया है और फिर उसके बाद ही अपनी कार में मेरी पत्नी को घर छोड़ कर गईं।

ग़ैर अहमदी रोगी भी उनके पास बहुत आते थे। एक बार उन्होंने ख़ुद सुनाया कि चिनोट के ग़ैर अहमदी मौलवी साहिब आ गए उनकी पत्नी के संतान नहीं होती थी तो उनके इलाज से अल्लाह तआला ने फज़ल किया और उम्मीद बंधी तो कहती हैं अब यह मौलवी साहिब नौ महीने तो मेरे काबू में हैं और ख़ूब उन्हें तब्लीग़ की उन्होंने कोई भय नहीं था।

फिर यह ताहिर नदीम साहिब हमारे अरबी डेस्क के हैं कहते हैं कि डॉक्टर साहिबा का दवाइयों से अधिक दुआ पर भरोसा था। कहते हैं मैं लंदन आ गया जब मेरी पत्नी वहीं थी और वहां पत्नी का कोई ऑपरेशन करना था इस में खतरा पैदा हो गया। डॉक्टर साहिबा ने हमें ख़ुद बताया कि इस समय मैंने ख़ुदा तआला से रो रोकर दुआ की कि हे खुदाया! वाकफे ज़िन्दगी की पत्नी है उसका पति तेरे धर्म की सेवा के लिए गया हुआ है तू अपना फज़ल कर दे तो कुछ देर के बाद ख़ुदा तआला ने ऐसा फज़ल किया कि जो रक्तस्राव हो रहा था पूरी तरह से रुक गया और ऑपरेशन की ज़रूरत नहीं पड़ी। मेहमान नवाज़ी के बारे में नदीम साहिब लिखते हैं कि हव्वारुल मुबाशिर के हमारे कार्यक्रम में जो अरब लोग आते हैं। 53 गेस्ट हाउस लंदन में बैठते हैं। वहाँ यह खुद भी ठहरी हुई थीं। यह अरब भी वहीं ठहरे हुए थे। कहते हैं एक दिन अपनी बेटी के साथ किचन में पराठे पका रही थीं तो कहने लगे कि यह जो अरब लोग हव्वारल मुबाशिर में शामिल हो रहे हैं। मैंने चाहा कि आप लोग जो धर्म की सेवा कर रहे हैं उन्हें अपने हाथ से पराठे बनाकर खिलाओं और इस तरह से मैं भी जिहाद के सवाब में शामिल हो जाऊं।

मुबश्शिर अयाज़ साहिब जामिया अहमदिया रबवा के प्रिंसीपल हैं इनके चाक-चौबंद होने और पर्दा के बारे में लिखते हैं कि हमारी यह डॉक्टर साहिबा भी बुर्का पहने सही पर्दे की सबसे अच्छी हालत को अपनाए हुए फौजी जवानों की तरह भागदौड़ करती नज़र आती थीं। जो महिलाएं पर्दा को रोक समझती हैं उनके लिए यह अच्छा रोल मॉडल थीं। सारा सारा दिन काम करती रहतीं और बड़ी सक्रिय रहतीं फिर भी कभी थकान को अभिव्यक्त नहीं करतीं।

डॉक्टर सुल्तान मुबश्शिर साहिब कहते हैं कि दफातिर सदर अंजुमन अहमदिया में हम रहते थे। यह भी रहती थीं। वहाँ उस समय रबवा का एक माहौल था आपस में बेतकल्लुफी थी, आना जाना था। दोस्त मुहम्मद शाहिद साहिब के यह बेटे हैं उन के और मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान की आपस में दोस्ती भी थी और चूंकि मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान साहिब के कोई पुत्र वहाँ नहीं थे इसलिए दोस्त मुहम्मद शाहिद साहिब ने अपने बेटे को कहा था कि उनके घर से पता करते रहा करो कोई ज़रूरत हो किसी चीज़ की, कोई चीज़ बाज़ार से लानी हो तो काम कर दिया करो। इस लिए यह जाते रहते थे। इस लिहाज़ से बड़ी बेतकल्लुफी थी और कहते हैं कि डॉक्टर साहिबा से भी पूछता रहता था फिर अस्पताल में इकट्ठे कोलीग भी रहे और हल्का सा भी अगर उनका काम किया तो इतना आभारी होती थीं कि कई बार धन्यवाद करतीं और फिर बच्चों को तोहफा और पत्नी को तोहफा और उन्हें तोहफा आदि दिया करती थीं।

यह लिखते हैं कि इनका गइनी का विभाग था इस को नई आवश्यकताओं के अनुरूप करने के लिए लगभग हर साल वह इंग्लैण्ड जाकर नए प्रोसीजर जानने आती थीं और अपने खर्च पर आती थीं। यह नहीं कि जमाअत के खर्च पर आतीं तथा विभिन्न लोगों के सहयोग से नई मशीनें भी लातीं। यह लिखते हैं कि अभी अभी ही ज़ुबैदा बानी विंग में नए ऑपरेशन थियटर के निर्माण में बड़ी सक्रिय रूप से भाग लिया लेकिन उन्हें इस का उपयोग करने का मौका नहीं मिला बहरहाल अल्लाह

तआला जो मौजूद डॉक्टर हैं उन्हें तौफ़ीक़ दे कि इस का सही उपयोग कर सकें। यह लिखते हैं कि सारांश यह कि फज़ल उमर अस्पताल में विभाग की वर्तमान अवस्था जो एक कमरे से शुरू हुई थी अब एक पूरे विंग में तब्दील हो चुका है और इसमें डॉक्टर नुसरत जहां की योग्यता और दिन रात की मेहनत और भरपूर जोश का बहुत बड़ा हिस्सा है।

जमीला साहिबा उनकी स्टाफ नर्स लिखती हैं कि डॉक्टर साहिबा की मौत का बड़ा अफसोस है। डॉक्टर साहिबा एक बहुत ही अच्छी और अच्छे व्यवहार वाली डॉक्टर थीं। हम सब का बहुत ध्यान रखने वाली डाक्टर थीं। बच्चों की तरह हमें प्यार करती थीं और बहुत ख्याल रखती थीं। जो भी ग़रीब मरीज़ आता उसे पर्ची के पैसे भी वापस कर देतीं और दवा भी अपने पास से देतीं।

फिर एक और स्टाफ नर्स मुसर्रत साहिबा लिखती हैं कि अच्छी शफीक़ शिक्षिका और उच्च चरित्र वाली कुशल चिकित्सक थीं। मैंने लगभग इकतीस साल का समय उनके देखरेख में बिताया है बहुत मुहब्बत करने वाली, अत्यंत संवेदनशील हर मुश्किल घड़ी में साथ देने वाली, वयस्कों का दुख दूर करने वाली, बच्चों से स्नेह का व्यवहार करने वाली, रोगियों के साथ बेहद प्यार से पेश आना, उनकी तकलीफ को अपनी तकलीफ समझना सारे स्टाफ को हमेशा समाज सेवा और अच्छे स्वभाव का दर्स देना, समय के ख़लीफा के आदेश पर लब्बैक कहने वाली हस्ती थीं।

फिर उनकी एक मरीज़ा लिखती हैं कि एक बार मेरा इलाज कर रही थीं और वक्फ ज़िन्दगी की पत्नी होने के कारण काफी ध्यान देती थीं। अल्ट्रासाउंड करवाना था तो अपनी सहायक को कहा कि उनका अल्ट्रासाउंड करा लाओ। उस समय काफी भीड़ थी। एक कुर्सी थी वहाँ पर एक ग़रीब सी औरत बैठी हुई थी तो उस औरत ने जो सहायक थी, उस ने उस औरत को उठा दिया क्योंकि डॉक्टर साहिबा ने मरीज़ा को भेजा था इसे बैठाना चाहा क्योंकि डाक्टर साहिबा ने भेजा था तो देखा कि अचानक पीछे से आवाज़ आई कि नहीं तुम इसे कुर्सी पर नहीं इस पर बैठो। देखा तो डॉक्टर साहिबा स्वयं एक कुर्सी उठा कर ला रही थीं ताकि जो दूसरी ग़रीब मरीज़ा है उसे यह एहसास न हो कि मुझे उठाया गया है क्योंकि रोगी सारे एक ही सामान होते हैं लेकिन दूसरी ओर उसकी हालत देख कर यह भी था कि बैठने की जगह मिल जाए इसलिए ख़ुद ही कुर्सी उठा कर ले आईं और अपनी मरीज़ा को उस पर बिठा दिया।

एक और डॉक्टर साहिबा हैं वह लिखती हैं कि जमाअत के लिए बहुत सम्मान रखती थीं। ख़िलाफत से बेहद प्यार था। अपने साथ काम करने वाली डॉक्टरों को भी उभारती रहती थीं कि समय के ख़लीफा से निजी संबंध बनाने और दुआ के लिए अक्सर लिखा करें। हर काम के लिए जब भी दुआ के लिए लिखती तो कहती हैं समय के ख़लीफा को हमारे लिए भी दुआ के लिए कहतीं। फिर मुझे लिखा है कि आप की तरफ से जवाब आता इसे पढ़कर सब को सुनातीं और आँखों में जो खुशी होती थी वह उनके स्वर से भी उजागर हो रही होती थी और आँखों से भी। कहती हैं कि वह हम सब के ईमान को बढ़ाने वाली होती थीं। अपना जीवन जमाअत के लिए समर्पित कर के न सिर्फ अपनी सांसारिक सुविधाओं और माल की कुर्बानी की थी, बल्कि वह हम सब डॉक्टरों को भी अपने जीवन का उदाहरण देकर वक्फ और जमाअत की सेवा करने के लिए प्रेरित करती थीं। उनके साथ काम करने से रोज़ मनुष्य का ईमान ताज़ा होता था और दिल में वक्फ की भावना उभरती थी।

ख़िलाफत की आज्ञाकारिता की एक घटना मुझे आबिद ख़ान साहिब हमारे प्रेस इन्चार्ज जो हैं उन्होंने लिखा कि उन्हें कहा कि मैं तो समय के ख़लीफा के मुंह से कोई बात सरसरी तौर पर भी सुन लूँ कोई आदेश नहीं है बल्कि सरसरी बात ही हो तो उसे भी आदेश समझती हूं और उस पर अनुकरण करने की कोशिश करती हूँ। तो यह है वह सच्चाई और आज्ञाकारिता की गुणवत्ता जो उनमें थी।

उनके बारे में बहुत सारे लिखने वाले हैं इस समय सब तो वर्णन करने कठिन हैं। एक महिला ने लिखा कि एक बार मैं अपने घर से जो अस्पताल के पीछे है लजना दफतर जा रही थी तो यह जमाअत की कार में जमाअत के काम के लिए बाहर कहीं जा रही थीं। मुझ से पूछा कहां जा रही हो तो मैंने बताया लजना के दफतर में अमुक ड्यूटी है तो उन्होंने ड्राइवर को कहा कि पहले इसे लजना दफतर में छोड़ आओ क्योंकि यह जमाअत के काम से जा रही है और फिर कहा कि जमाअत की कार को मैं केवल जमाअत के काम के लिए इस्तेमाल करती हूँ।

आप की बेटी नुदरत आयशा साहिबा बयान करती हैं कि मेरी अम्मी एक आदर्श माँ और बहुत प्यार करने वाला वुजूद थीं। मेरे और मेरे बच्चों के लिए बेहद दुआएं किया करती थीं जब कोई मुश्किल पेश आ रही होती तो तुरंत अम्मी को फोन कर देती और बेफिक्र हो जाती और अल्लाह तआला की कृपा से बाद में वह काम आसान हो जाता। फिर मुझे कहतीं कि तुम सिज्दह शुक्र करो। बेपनाह व्यस्तता के बावजूद मेरी परवरिश और प्रशिक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतनी बुलंद हौसला और साहसी थीं कि मुझे माँ और पिता दोनों बनकर पाला। अगर कभी उन्हें एहसास होता है कि बेटी की सही तरह सेवा नहीं कर सकी तो कहतीं कि मैं अपनी बेटी को व्यस्तता के कारण इतना समय नहीं दे सकती लेकिन फिर तुरंत कहतीं कि जो समय मानवता की सेवा में व्यतीत हुआ इसका महत्त्व बहुत अधिक है अल्लाह तआला मेरी औलाद का काम ख़ुद बना देगा। हमेशा मुझे कहा करती थीं कि तुम्हारे नाना जान ने दो बातें अपने बच्चों को नसीहत फ़रमाई थी। एक अल्लाह तआला पर भरोसा और दूसरा ख़िलाफत से प्रतिबद्धता और वही उपदेश मैं तुम्हें करती हूं कि हमेशा अल्लाह तआला पर भरोसा करना और ख़िलाफत से ख़ुद को और अपने बच्चों को जोड़े रखना। यह लिखते हैं कि ख़िलाफत से अपार श्रद्धा और प्यार करती थीं। जब बीमार हुईं और वेंटिलेटर पर लगाने लगे तो नमाज़ पढ़ी और मेरे मोबाइल फोन से कुरआन पढ़ा। फिर एक पेपर और पेन मांगा जिस पर लिख दिया कि समय के ख़लीफा को बार बार दुआ का संदेश भेजती रहना। कहती हैं कि मैंने अपनी अम्मी को अपार श्रद्धा और जमाअत की सेवा की भावना से समर्पित पाया। फज़ल उमर अस्पताल में अम्मी की सेवाओं की शुरुआत एक छोटे से परामर्श रूम से हुई जिसके एक ओर काउच और दूसरी ओर साधारण सी मेज़ कुर्सी पड़ी हुई थी। उनकी सेवा भावना और दुआओं ने पहले उन्हें श्रम वार्ड और फिर गाइनी विभाग की independent बिल्डिंग दे दी जिसे उन्होंने और उनकी टीम ने बड़े चाव और लगन से एक सफल इकाई बना दिया। मेडिकल इक्विपमेन्ट ख़रीदने ख़ुद लाहौर और फैसलाबाद जाया करती थीं और मैं भी कुछ सफरों में उनके साथ थी। प्रत्येक दुकानदार से कोटेशन लेतीं और कोशिश करतीं कि जमाअत के पैसे को बचाया जाए।

एक बार कहती हैं मेरी बेटी आलिया पंद्रह दिन के लिए रबवा आई हुई थी उसे भी अपने विभाग के काम में शामिल किया कि टाइपिंग में मदद करो क्योंकि तुम्हारी टाइपिंग स्पीड अच्छी है और जमाअत की सेवा करना एक सौभाग्य है और तुम इस सौभाग्य से हिस्सा पाओ। अपने काम की ऐसी धुन थी कि बीमारी के अंतिम दिनों में भी अस्पताल का नाम सुनकर उनके चेहरे पर मुस्कान आती और तन्द्रा की हालत में भी अस्पताल के ऑपरेशन थिएटर और मशीन बनाने वाली कंपनियों के नाम लेतीं जिसे सुनकर अंग्रेज़ नर्सज़ भी हैरान होतीं और मुझ से पूछने लगतीं कि यह क्या कह रही हैं। अल्लाह तआला की ज़ात पर बेहद भरोसा था। गंभीर बीमारी की हालत में कुछ दिन तक बात नहीं कर सकतीं थीं जब स्पीकिंग वाल्व लगाया गया जो पहला वाक्य अम्मी ने अदा किया वह यह था कि मेरी बेटी अल्लाह तआला पर छोड़ दो और मैं रोने लगती तो आंख के इशारे से अल्लाह तआला की ओर इशारा करतीं।

अल्लाह तआला उनकी इस इकलौती बेटी को भी धैर्य और साहस प्रदान करे और जो उसकी माँ ने उसे नसीहतें की हैं और उम्मीदें रखी हैं अल्लाह तआला उन पर इसे पूरा उतरने की तैफीक़ भी प्रदान करे। अल्लाह तआला इस बच्ची को और इसकी औलाद को भी हमेशा अपनी सुरक्षा और हिफाज़त में रखे। मरहूमा के भी स्तर ऊंचा करे और अल्लाह तआला फज़ल उमर अस्पताल को सेवा करने वाली और वफा के साथ अपने काम को पूरा करने वाली, वफा के साथ जमाअत से जुड़े रहने वाली और ख़िलाफत की आज्ञाकारिता करने वाली अधिक डाक्टर भी प्रदान करता रहे और जो मौजूद हैं उनको अल्लाह तआला इस काम में बढ़ाता चला जाए।

नमाज़ जुम्अ: के बाद मैं इन दोनों का नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 24 November 2016 Issue No. 38

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं

क़ादियान की पवित्र भूमि में अहमदिया मुस्लिम जमाअत का 122 वां रूहानी

जलसा सालाना

26, 27, 28, दिसम्बर 2016 ई.

दिन सोमवार, मंगलवार, बुधवार

सत्य की खोज एवं आत्मिक शान्ति प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर। स्वयं पधारें और धार्मिक सद्भावना एवं विश्व शान्ति की स्थापना से सम्बन्धित सुन्दर व्याख्यान सुनकर लाभ उठाएँ।

नोट :- (1) इस अवसर पर 27 दिसम्बर को 2 बजे दोपहर सर्वधर्म सम्मेलन का विशेष रूप से आयोजन किया जा रहा है।

(2) 28 दिसम्बर को संध्या 3:30 बजे इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का भाषण लन्दन से "मुस्लिम टैलीविज़न अहमदिया" के द्वारा सीधा प्रसारित होगा।

(3) भाषणों के समय प्रश्न करने की अनुमति नहीं होगी।

निवेदक : नाज़िर इस्लाह व इरशाद क़ादियान
ज़िला गुरदासपुर (पंजाब) भारत,
पिन कोड - 143516

Ph. : 01872-500980 (O)
Mobile: 09417730907
09417485781
09878047444
Fax : 01872-500977
Toll Free 1800301021 31

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad